International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 11 Issue 5, Sept.-Oct, 2023, Impact Factor: 7.326

हरियाणा के इतिहास को पुनर्वलोकन मे संग्रहालयो की भुमिका

Suraksha

Research Scholar, Department of History, Baba Mastnath University, Rohtak

---

सारांश-

हरियाणा का इतिहास बहुत गहरा और विविध है, इसके पुनर्वलोकन मे संग्रहालयों की महत्वपूर्ण भूमिका है। संग्रहालय विभिन्न धाराओं और कलाओं के माध्यम से राज्य के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और सामाजिक पहलुओं को प्रस्तुत करते हैं। संग्रहालय प्राचीन सभ्यताओं के आदि से लेकर हरियाणा के प्राचीन इतिहास को प्रस्तुत करने का कार्य करते हैं। संग्रहालयो मे प्रदर्शित पुरातात्विक वस्तुएं, मूर्तियाँ, शिलालेख, प्राचीन आभूषण और खगोलशास्त्रीय लोगों को राज्य के गौरवशाली इतिहास, प्राचीन सभ्यता, और भूगोल को समझाने व हरियाणा किस प्रकार से एक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक रुप मे विकास को समझने मे मदद करते है। हरियाणा में कई पुरातात्विक संग्रहालय व स्थल हैं जो विभिन्न कालों में बने थे। कुरुक्षेत्र, भिष्मकुंड, रोपड़, बड़गाँव, ते जले, आदि इन स्थलों में आपको प्राचीन सभ्यता के साक्षात्कार के लिए अवसर मिलता है। हरियाणा के प्राचीन सभ्यता का प्रस्तुतीकरण में लोककला और नृत्य का महत्वपूर्ण योगदान होता है। यहां के लोग अपनी परंपराओं को बनाए रखने के लिए लोककला और नृत्य के प्रशिक्षण में रुचि लेते हैं और इसे स्थानीय और अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर प्रदर्शित करने के संग्रहालयो मे इनकी प्रदर्शनी करते हैं।

मध्यकालीन समय मे हरियाणा मुगल साम्राज्य के दौरान एक महत्वपूर्ण क्षेत्र था। संग्रहालय इस समय के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पहलुओं को उजागर करने के लिए विभिन्न वस्तुओ का प्रदर्शन करते हैं, जिससे लोग मुगल साम्राज्य के साथ हरियाणा के संबंध को समझ सकते हैं। संग्रहालयों में मुगल साम्राज्य के समय की आकृतियाँ और मूर्तियाँ प्रदर्शित होती हैं, जो मुगल कला और सांस्कृतिक परंपरा को दिखाती हैं। यह चित्रित करता है कि उन दिनों कैसी कला और सांस्कृतिक विकास हुआ था। मुगल साम्राज्य में आभूषण और वस्त्रों की शृंगारी विशेषज्ञता थी। संग्रहालयों में उनके समय के आभूषण, वस्त्र, और शृंगारी सामग्री का प्रदर्शन करके यह दिखाया जाता है कि मुगल सम्राटों और उनके दरबारीयों की विशेष रूचियाँ कैसी थीं। संग्रहालयों में मुगल साम्राज्य के किलों के अवशेष, मॉडल दिखाए जाते है, जिससे लोग मुगल कला और संस्कृति के भव्यता को समझते हैं। मुगल साम्राज्य के समय की हस्तशिल्प और शिल्पकला के उदाहरणों का प्रदर्शन करके, संग्रहालय लोगों को उन शिल्पकला कलाओं से मिलाते हैं जो मुगल आदि महाराजाओं के द्वारा प्रोत्साहित किए जाते थे। संग्रहालयों में मुगल साम्राज्य के समय की ऐतिहासिक पुस्तकें और सामग्री भी होती हैं, जो लोगों को उस समय के घटनाक्रमों और सांस्कृतिक परिवर्तनों के बारे में जानकारी प्रदान करती हैं। संग्रहालयों के माध्यम से हरियाणा में मुगल साम्राज्य के प्रस्तुतीकरण से लोगों को एक जीवंत और गहरी ऐतिहासिक अनुभव प्राप्त होता है।

संग्रहालयों में स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख घटकों की यादें भी होती हैं। यह लोगों को राजनीतिक और सामाजिक परिवर्तनों के साथ हरियाणा के योगदान को समझने में मदद करता है। हरियाणा में स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास का पुनर्वलोकन करने में संग्रहालयों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। संग्रहालयों में स्वतंत्रता संग्राम स्मारकों का प्रदर्शन होता है जो हरियाणा के स्वतंत्रता सेनानियों और स्वतंत्रता संग्राम के नायको को समर्पित हैं। संग्रहालयों में स्वतंत्रता संग्राम से जुड़े व्यक्तियों की आत्मकथाएं, व्यक्तिगत सामग्री जैसे कि पत्र, फोटो, व्यक्तिगत वस्त्र, आदि और स्मृतिचिन्हों का संग्रह होता है, जिससे लोग उनके अनुभव और संघर्ष को समझ सकते हैं। संग्रहालयों में विभिन्न स्वतंत्रता संग्राम के घटनाक्रमों की प्रदर्शनी होती है जो स्वतंत्रता संग्राम के महत्वपूर्ण पलों को दिखाती हैं। संग्रहालयों में वीडियो और ऑडियो साक्षात्कारों के माध्यम से, स्वतंत्रता संग्राम में शामिल हुए व्यक्तियों के अनुभव और कथाएं साझा की जा सकती हैं। ये स्मारक आधिकारिक सुविधाओं के साथ मिलकर लोगों को उन योद्धाओं के साहस और बलिदान का अनुभव करने का अवसर प्रदान करते हैं।

मुख्य शब्द :– संग्रहालय, पुनर्वालोकन,सांस्कृतिक, पुरातात्विक, कलाकर्तियां, मुर्तियां, मुद्राएं।

संग्रहालय राज्य की विभिन्न सांस्कृतिक परंपराओं, लोककलाओं और कलाओं को प्रस्तुत करते हैं। यह लोगों को हरियाणा की समृद्धि और विविधता के साथ जुड़ी सांस्कृतिक धरोहर को देखने का अवसर प्रदान करता है। इन संग्रहालयों के माध्यम से लोग अपनी संस्कृति और ऐतिहासिक विरासत को समझते हैं, जो उन्हें अपनी पहचान और गर्व महसूस करने में मदद करता है। संग्रहालय लोककला, लोककल्चर, और लोककला के अभिव्यक्ति को प्रदर्शित करने व स्थानीय गीत, नृत्य, और शैली के प्रदर्शन करते है। साथ ही संग्रहालयों में प्राचीन सांस्कृतिक परंपराएं, परंपरागत उपहार और उनकी शृंगारी जैसे वस्त्र, आभुषण आदि अभिव्यक्ति को प्रदर्शित करके हरियाणा की विविधता को दर्शाया जाता हैं। संग्रहालयों में लोगों को स्थानीय हस्तशिल्प, पेंटिंग्स, साहित्य, और अन्य कलाओं का प्रदर्शन करते है, जो स्थानीय कलाकारों की रूपरेखा करता है। संग्रहालयों में पुरातात्विक आवश्यकताएं और पुरातात्विक स्थलों व धार्मिक स्थलो से लाए गए आकृतियाँ होती हैं, जो लोगों को हरियाणा के ऐतिहासिक पुरातात्विक व धार्मिक समृद्धि को समझने में मदद करती हैं। संग्रहालयों की इस भूमिका से, हरियाणा के सांस्कृतिक परंपराएं और कलाएं जीवंत रूप से रखी जा रही हैं, जो लोगों को उनके स्थानीय इतिहास और सांस्कृतिक विरासत के साथ जोड़ती हैं।

हरियाणा राज्य के कुछ मुख्य म्यूजियम निम्नलिखित हैं:

1. हरियाणा संस्कृति जीवन संग्रहालय, कुरुक्षेत्र: इस म्यूजियम में हरियाणा के संस्कृति और जीवन के विभिन्न पहलुओं का प्रदर्शन होता है, जैसे कि पूर्वकालीन आदिवासी संस्कृति, युगांतर कला, और ऐतिहासिक कलाकर्तियां।
2. हरियाणा सिंधु संस्कृति संग्रहालय, हिसार: इस म्यूजियम में सिंधु सभ्यता के प्रतिमान प्रदर्शित किए जाते हैं, जैसे कि मोहनजोदड़ो के खद्यानों से प्राप्त वस्तुएं, सिंधु सभ्यता के संग्रहालय के प्रमुख धातु और औजार, और ऐतिहासिक जीवन के संगंधित कलाकर्तियां।

3. कुरुक्षेत्र पुरातात्विक संग्रहालय, कुरुक्षेत्र: इस म्यूजियम में कुरुक्षेत्र के ऐतिहासिक और पुरातात्विक महत्वपूर्ण स्थलों से प्राप्त कलाकर्तियां और वस्तुएं प्रदर्शित होती हैं, जिनमें मौर्य, गुप्त, और पाल शासकों के समय के शिलालेख, धातु के आजाद औजार, और ऐतिहासिक मूर्तियाँ शामिल हैं।
4. हरियाणा जलमहल संग्रहालय, पानीपत: यह संग्रहालय पानीपत के जलमहल के इतिहास और धर्म के विभिन्न पहलुओं को प्रदर्शित करता है, जैसे कि पौराणिक ग्रंथों के हस्तलेख, धार्मिक कलाकर्तियां, और ऐतिहासिक जीवन के संबंधित वस्तुएं।
5. हरियाणा आर्ट गैलरी, पंचकुला: इस गैलरी में भारतीय कला के प्रमुख कलाकारों के कृतियाँ प्रदर्शित की जाती हैं, जिनमें चित्रकारी, मुर्तिकलाऔर छायांकन शामिल हैं।
6. हरियाणा स्टेट म्यूजियम, चंडीगढ़: यह संग्रहालय हरियाणा के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहर को प्रदर्शित करता है। यहां पुरातात्विक आकृतियाँ, शिलालेख, और भूगोल के प्रदर्शन होते हैं।
7. श्री हरियाणा सांस्कृतिक भवन, व्यास: इस संग्रहालय में हरियाणा की सांस्कृतिक और लोककला को बढावा देने का प्रयास किया जाता है। यहां लोगों को हरियाणवी भाषा, नृत्य, और गायन के माध्यम से स्थानीय सांस्कृतिक परंपराएं सिखाई जाती हैं।
8. हरियाणा राज्य आदिवासी और जनजाति म्यूजियम, भिवानी: यह संग्रहालय आदिवासी और जनजातियों के सांस्कृतिक विरासत को बचाए रखने का कार्य करता है।
9. पानीपत संग्रहालय, पानीपत: इस संग्रहालय में पानीपत के तीनो युद्धो के बारे मे विस्तारपुर्वक तथ्य प्रदर्शित किए गए है व साथ ही प्राचीन समाज की सामाजिक व आर्थिक वस्तुए भी प्रदर्शनी मे लगाई गई है।

पानीपत संग्राहलय मे रखी "पानीपत के युद्ध का एक दृश्य"

10. स्वामी ओमानंद सरस्वती पुरातत्व संग्रहालय, झज्जर – इस संग्रहालय मे सबसे अधिक रोहतक, भिवानी, सोनीपत, झज्जर, यमुनानगर, करनाल व हिसार आदि से प्राप्त

सिक्के, शिलालेख, पत्थर, औजार, प्राचीन समय के दैनिक आवश्यकता की वस्तुए आदि है। यहां हजारों वर्ष पुरानी मूर्तियां, सिक्को का भी भंडार है। रेवाड़ी के गुरावड़ा से से प्राप्त संवत 954 में राजा वीर चंद्र के देहांत के बाद लिखा गया शिलालेख भी विद्यमान है। साथ ही यहां हरियाणा की संस्कृति व कला से जुडी वस्तुए भी रखी हुई है।

हरियाणा में और भी कई संग्रहालय हैं, जो विभिन्न पहलुओं के प्रदर्शन के लिए महत्वपूर्ण हैं। हरियाणा के प्रमुख संग्रहालयों में रखी कुछ प्रमुख वस्तुएं निम्नलिखित हैं:

- पूर्वकालीन आदिवासी संस्कृति के उपकरण और कलाकर्तियां
- युगांतर कला, जैसे कि मौर्य, गुप्त, पाल, और मुगल काल की कला
- सिंधु सभ्यता के प्रतिमान
- प्रचीन, मध्यकालीन व आधुनिक युग के धातु के औजार
- ऐतिहासिक जीवन से संबंधित वस्तुएं
- कुरुक्षेत्र के ऐतिहासिक और पुरातात्विक महत्वपूर्ण स्थलों से प्राप्त कलाकर्तियां
- मौर्य, गुप्त, पाल शासकों आदि के समय के शिलालेख
- ऐतिहासिक मूर्तियाँ
- पानीपत के जलमहल के इतिहास
- पौराणिक, मध्यकालीन व आधुनिक युग के ग्रंथों के हस्तलेख
- धार्मिक कलाकर्तियां
- ऐतिहासिक जीवन से संबंधित वस्तुएं

संग्रहालय राज्य के संस्कृति, ऐतिहास, धर्मिक, और कला की अमूल्य धरोहर को सुरक्षित रखते है जिससे हरियाणा के इतिहास व विरासत के पुनर्वलोकन मे संग्रहालयो की भुमिका साफ दिखाई देता है और दर्शकों को इनका अध्ययन करने का मौका प्रदान करता हैं। संग्रहालय हरियाणा के इतिहास के संरक्षण हेतु कई प्रौद्योगिकियों का भी उपयोग करते हैं, जैसे कि तार रहित टैगिंग, कलाकर्तियो का संरक्षण, और अंकिकरण ताकि ऐतिहासिक व सांस्कृतिक वस्तुओ की देखभाल और प्रसार की ओर भी सुरक्षित और प्राथमिकताग्रस्त हो सके। संग्रहालयों को अनुसंधान के क्षेत्र में नवाचारी विचारों का समर्थन करने के लिए विशिष्ट प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जा सकते हैं। वित्तीय समर्थन की कमी के कारण कुछ संग्रहालय अपने संवर्धन और संरक्षण कार्यक्रमों को संकट में देख रहे हैं। तंत्रशीलता की कमी एक बड़ी चुनौती है, जैसे डिजिटलीकरण, ऑनलाइन प्रदर्शन आदि। इतिहास के मूल्यवान कलाकर्तियां की सुरक्षा अति आवश्यक है। यहां एक महत्वपूर्ण समस्या उत्पन्न होती है औऱ वह है चोरी और अवैध तस्करी। जिन्हे रोकने के लिए संग्रहालयो मे उचित सुरक्षा व प्रबंधन की आवश्यकता है। संग्रहालयों को जन सहयोग की आवश्यकता है, जैसे कि दान और स्वयंसेवा, ताकि

संग्रहालयों की संवर्धन क्षमता बढ़ सके। संग्रहालयों को कदमबद्ध नीतियों की आवश्यकता होती है, जिनसे संरक्षण, प्रदर्शन, शिक्षा, और प्रबंधन के क्षेत्रों में सुनिश्चितता और सहयोग बढ़ सके। इन कठिनाइयों का सामना करने के लिए संग्रहालय प्रबंधन को सही नीतियोँ और सहयोग की आवश्यकता होती है।

निष्कर्ष

इस शोध से हरियाणा के विभिन्न समय के इतिहासी घटनाओं को उजागर करने और अध्ययन करने के लिए संग्रहालयों के उपयोग के बारे मे पता चला है। इस शोध में, विभिन्न संग्रहालयों की रचना, उनके सामग्री, उपकरण और प्रदर्शनी तकनीकों का विश्लेषण व संग्रहालयों में किस प्रकार की कलाकर्तियाँ, प्राचीन वस्तुएं, लेख-संग्रह, प्रमाणपत्र, आदि संग्रहित हैं और कैसे वे इतिहास की विविध दृष्टियों को दर्शाते हैं। जिनमें स्थानीय इतिहास, सांस्कृतिक विरासत, और प्राचीनता को संजोया गया है। इस शोध से पता चलता है कि कैसे संग्रहालयों को अपने कला, अभिविन्यास, और प्रदर्शनी के माध्यम से हरियाणा के ऐतिहासिक धारा को बेहतर ढंग से प्रस्तुत किया जा रहा है। हरियाणा के इतिहास के पुरवालोकन मे संग्रहालयो की भुमिका का विश्लोषण करके उसके सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभावो को जनमानस के समक्ष प्रस्तुत किया गया है।

संदर्भ सुचि

1. सहाय, शिवस्वरुप "संग्रहालय की ओर" वर्ष 2019
2. गणेशन्, डॉ0 "भारत के विविध संग्रहालय" वर्ष 2006
3. सिल्वरस्टोन, आर. "म्युजियम एंड द मीडिया: ए थयोर्टिकल एंड मेथ्डोलोजिकल एक्सप्लोर" वर्ष 1988
4. सुभरम्नयम, आर. "साईस, म्युजियम एंड प्लेनिट्रीया" वर्ष 1973
5. सिंह, प्रभास कुमार "म्युजियम एंड एजुकेशन" वर्ष 2004
6. ओडिआ, डब्ल्यु. टी. "ए रिजनल म्युजियम ऑफ साईस" वर्ष 1958
7. प्रिंस, एस "मोर दैन ए फिल्ड ट्रीप : ए साईस म्युजियम" वर्ष 1991
8. हेन, जी. "म्युजियम: प्लेस ऑफ लर्निंग" वर्ष 1998
9. हेन, जी. "लर्निंग इन म्युजियम" वर्ष 1998
10. ब्लैक, जी. "द इन्गेजिंग म्युजियम : डव्लोपिंग म्युजियम फोर विजीटर्स" वर्ष 2005
11. अग्रवाल, ओ.पी., "केयर एंड परिजर्वेशन ऑफ म्युजियम ओबजेक्ट, नेशनल रिसर्च लैबोरेट्री, लखनउ" वर्ष 1978
12. अग्रवाल, ओ.पी.,"सैक्योरिटी इन म्युजियम, म्युजियम एसोसिएसन ऑफ इंडिया, न्यु दिल्ली" वर्ष 1979

13. अग्रवाल, उषा "डारिक्ट्री ऑफ म्युजियम इन इंडिया, न्यु दिल्ली" वर्ष 2003
14. अग्रवाल, उषा "म्युजियम ऑफ इंडिया, न्यु दिल्ली" वर्ष 2003
15. दत्ता, एम. "ए स्टडी ऑफ द सत्यावाहना कोईनएज, न्यु दिल्ली" वर्ष 1990
16. बनर्जी, एन.आर. "म्युजियम एंड कल्चर हैरिटेज ऑफ इंडिया, दिल्ली" वर्ष 1990
17. राय, पी.सी. "द कोईनएज ऑफ नोर्थन इंडिया, न्यु दिल्ली" वर्ष 1980
18. सिंह, ए.पी. "कंजर्वेसन एंड म्युजियम टैक्निक, दिल्ली" वर्ष 1987
19. शर्मा, एस. "म्युजियम पब्लिकेसन, इंडियन म्युजियम, न्यु दिल्ली" वर्ष 1983
20. सरकार, एच. "म्युजियम एंड प्रोटेशन ऑफ मोन्युमेंट्स एंड एंटीक्स इन इंडिया" वर्ष 1981
21. दैवकरणि, विरजानन्द "प्राचीन ताम्रपत्र एवं शिलालेख"
22. दैवकरणि, विरजानन्द "प्राचीन भारत मे रामायण के मन्दिर"
23. दैवकरणि, विरजानन्द "अगरोहा (अग्रोदक) की मृन्मूर्तियाँ"
24. दैवकरणि, विरजानन्द "भारत के प्राचीन मुद्रांक"
25. दैवकरणि, विरजानन्द "नौरंगाबाद (बामला) की मृन्मूर्तियां"
26. दैवकरणि, विरजानन्द "स्वामी ओमानन्द ग्रन्थमाला भाग – 1 से 4" वर्ष 2003